



THE
MENTORING
PROJECT

बुद्धिमानी से निवेश करना: परमेश्वर के अनुसार धन का निवेश कैसे करें और उसे कैसे बढ़ाएँ



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

बुद्धिमानी से निवेश करना: परमेश्वर के अनुसार धन का निवेश कैसे करें और उसे कैसे बढ़ाएँ



लेखक: डॉ. रिचर्ड परहार्ड

सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स

विषय-वस्तु

परिचय: बीज और तनाव	4
धन के विषय में बाइबल आधारित ईश्वरविज्ञान - हम धन क्यों अर्जित करते हैं	7
बाजार की मूर्तियाँ	11
बुद्धिमानी से निवेश करना - वित्तीय बुद्धिमानी के लिए बाइबल आधारित सिद्धांत	16
बढ़ती हुई समृद्धि का प्रबन्धन	20
वह सम्पत्ति जो संसार के समाप्त होने के बाद भी बनी रहती है	24
निष्कर्ष: खुले हाथ	28



परिचय: बीज और तनाव

मुझे स्मरण है कि कई वर्ष पहले मैं एक पुराने घर के प्रवेश-मार्ग में खड़ा होकर अपनी कलीसिया के एक व्यक्ति से बात कर रहा था। उसने दशकों तक उसी कारखाने में काम किया था। वह सदैव वही जूते पहनता और अपनी नियमित दिनचर्या का पालन करता था। वह न तो दिखावा करने वाला था और न ही उतावलेपन से काम लेने वाला था। उसने वही सब किया था जो हमें सिखाया गया है, जैसे परिश्रम करना, बचत करना और सावधानी से जीवन जीना। परन्तु इतना सब करने के बाद भी वह भयभीत रहता था। यह उसके खड़े होने के ढँग और सामने देखने के स्थान पर नीचे दृष्टि करने से स्पष्ट दिखाई देता था। उसके भीतर एक मौन चिन्ता थी, जो उसके वर्षों के स्थिर कार्य के इतिहास से मेल नहीं खाती थी। रात के समय उसका हृदय तेज़ी से धड़कने लगता था, क्योंकि उसे यह चिन्ता सताती रहती थी कि यदि बाज़ार में एक भी बड़ा प्रतिकूल परिवर्तन आ जाए, तो वर्षों का उसका अनुशासित परिश्रम मिट सकता है। यद्यपि वह बाइबल के परिश्रम सम्बन्धी सिद्धांतों का पालन करता था, फिर भी इस संघर्ष में था कि आर्थिक चिन्ता पर बाइबल के अनुसार कैसे विजय प्राप्त की जाए।

बहुत से लोग इस प्रकार के तनाव को जानते हैं। यह तब भी प्रकट हो सकता है जब आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी दिखाई देती हो, और कभी-कभी तो उसी समय यह और भी अधिक बढ़ जाता है। हमारा संसार निरन्तर यह सिखाता रहता है कि धन ही सब कुछ है, और वही यह निर्धारित करता है कि हम कितने सुरक्षित हैं या हमारा कितना मूल्य है। जब संसार का यह दबाव हमारे विश्वास के विपरीत खड़ा होता है, तब हम प्रायः सोचते हैं कि धन के विषय में बाइबल क्या कहती है। फिर कलीसिया में हम धन के विषय में ऐसी चेतावनियाँ सुनते हैं, जो सहायता से अधिक न्याय सुनाने जैसी प्रतीत होती हैं।

इन सबके बीच बहुत से लोग भ्रमित हो जाते हैं। जब उनके पास धन होता है, तो वे दोषी होना अनुभव करने लगते हैं, और जब धन नहीं होता, तो भयभीत हो जाते हैं। जिन अधिकाँश मसीहियों को मैं जानता हूँ, वे यह नहीं समझ पाते कि इस दबाव का सामना कैसे करें या बाइबल के अनुसार कितना पर्याप्त है। वे उत्तरदायित्व निभाने और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के बीच स्वयं को फँसा हुआ पाते हैं। वे यह भी सोचते हैं कि क्या ये दोनों बातें साथ-साथ चल सकती हैं, या बचत करने और धन का संचय करने में कोई स्पष्ट भेद है। बहुत से विश्वासी इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर पाने के लिए बाइबल से आर्थिक मार्गदर्शन खोजते हैं, ताकि वे परमेश्वर के दिए हुए धन के अच्छे भण्डारी बनते हुए आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच भी शान्ति प्राप्त कर सकें।

जब बात स्पष्ट हुई

मैंने भी अपने जीवन में वही गाँठ अपने हृदय में अनुभव की है। सचमुच, मैंने की है। एक समय ऐसा था जब कलीसिया का बजट बहुत सीमित था और उसी समय मेरी गाड़ी से एक अजीब सी आवाज़ आने लगी। आप समझते हैं न, वैसे आवाज़ जिसे सुनकर तुरन्त मन में यह विचार आता है कि इसे ठीक कराने का खर्च उठाना अभी आपके लिए सम्भव नहीं है। मुझे स्मरण है, कि मैं अपने बगीचे में खड़ा होकर छोटी सी बीज की एक पुड़िया को देख रहा था और सोच रहा था कि वास्तव में एक अकेला बीज कितना छोटा होता है।

मेरा आशय यह है कि आप उस बीज को उसी समय खा सकते हैं। उस क्षण के लिए समस्या का समाधान हो जाएगा। अथवा आप उसे भूमि में भी बो सकते हैं। वह मिट्टी में ओझल हो जाएगा, और फिर आपको प्रतीक्षा करनी होगी। उसी समय मेरे लिए यह बात स्पष्ट हुई कि धन भी कुछ उसी बीज के समान है। वह कोई ऐसा देवता नहीं है जिसकी उपासना की जाए, और न ही वह ऐसा विष है जिससे भयभीत रहा जाए। वह तो केवल एक साधन है। वह परमेश्वर की ओर से सौंपा गया एक उत्तरदायित्व है। उसका उपयोग तत्काल भी किया जा सकता है, या विचारपूर्वक भविष्य के लिए बोया भी जा सकता है। जब हम अनन्तकाल की दृष्टि से निवेश करना आरम्भ करते हैं, तब सब कुछ बदल जाता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि भविष्य के विषय में और अर्थव्यवस्था पर परमेश्वर के प्रभुत्व के विषय में हमारा विश्वास वास्तव में क्या है। जब हम धन के विषय में बाइबल के इन सिद्धान्तों को समझते हैं, तब हमें ज्ञात होता है कि हम केवल उन्हीं बातों में निवेश कर रहे हैं जो इस संसार के नष्ट हो जाने पर भी बनी रहेंगी, और साथ ही अपने भविष्य के लिए की गई बचत भी परमेश्वर को सौंपते हैं।

भण्डारीपन बनाम स्वामित्व

कलीसिया बहुत लम्बे समय से इस विषय का सामना करती हुई आ रही है। यह केवल आज की समस्या नहीं है। कई शताब्दियों पहले धर्म-सुधारकों ने भी व्यापारियों और शिल्पकारों की "बुलाहट" के विषय में खुलकर कहा। उनका विश्वास था कि व्यापार यदि उचित रीति से किया जाए, तो यह अपने पड़ोसी से प्रेम करने का एक वास्तविक उपाय हो सकता है। उनके लिए धन की वृद्धि हर बार लोभ का विषय नहीं था। वह वृद्धि नए काम के अवसर उत्पन्न कर सकती थी, वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा कर सकती थी, और सुसमाचार के कार्य में सहायता कर सकती थी। उनके लिए यह विश्वासयोग्यता से साधनों का प्रबन्ध करने और स्वामी के लौटने की प्रतीक्षा करने का विषय था।

परन्तु वे जोखिमों के विषय में भी बहुत स्पष्ट थे। वास्तविक भण्डारीपन और केवल संचय करते रहने में बड़ा अन्तर होता है। "भण्डारीपन" एक शक्तिशाली शब्द है। उसका अर्थ है कि वास्तविक स्वामित्व किसी और का है। हम कहते हैं कि एक हज़ार पहाड़ों पर पशु परमेश्वर के हैं। पृथ्वी की गहराइयों में छिपा हुआ सोना भी उसका है। और चाहे हम इसे स्वीकार करें या न करें, इस समय हमारे बैंक खातों में जो धन रखा है, वह भी उसी का है।

समस्या यह है कि हममें से अधिकांश लोग वास्तव में इस प्रकार से नहीं जीते हैं। हम तो मानो स्वामी के समान जीते हैं। और केवल स्वामी? वे सदा चिन्तित रहते हैं। स्वामी को परिणामों का सारा भारी बोझ उठाना पड़ता है। परन्तु भण्डारी को

बुद्धिमानी से निवेश करना

ऐसा नहीं करना पड़ता है। भण्डारी का उत्तरदायित्व केवल विश्वासयोग्य बने रहने का है, अन्तिम परिणामों का नहीं। सच तो यह है कि यही एक अन्तर बदल देता है कि रात को आप कितनी शान्ति से सोते हैं।

यह मार्गदर्शिका उस अन्तर को मिटाने के विषय में है जो हमारे कहे हुए विश्वास और अपने धन के प्रबन्ध के बीच है। और नहीं, यहाँ कोई सरल उपाय नहीं है। मैं ऐसे कोई प्रतिज्ञा के वचन नहीं बोल रहा हूँ, जिन्हें बाइबल कभी नहीं कहती। आत्मिक बुद्धि का रूप देकर प्रस्तुत की जाने वाली शीघ्र धनी बनने की योजनाओं के लिए पवित्रशास्त्र में कोई स्थान नहीं है। इसके स्थान पर वह जो प्रदान करता है, वह है—दृढ़ता, धैर्य, और ऐसे संसार में निरन्तर तथा स्थिर आज्ञाकारिता जो अब भी टूटी हुई है।

एक नई मनोवृत्ति

परमेश्वर की रीति के अनुसार धन की वृद्धि प्रायः वैसी तीव्रता से नहीं होती जैसे अधिकाँश लोग अपेक्षा करते हैं। इसका अर्थ है, उस समय भी सत्य के अनुसार चलने का चुनाव करना, जब असत्य का मार्ग अधिक लाभ पहुँचा सकता है। यह देने के विषय में है उस समय भी जब बचाकर रखना अधिक सुरक्षित प्रतीत होता है। हमें स्वीकार करना होगा कि जैसे वास्तविक खेत, वैसे ही बाज़ार भी उत्पत्ति 3 में दिए गए उसी श्राप के प्रभाव में हैं। जहाँ काँटे उगते हैं। फसलें नष्ट हो जाती हैं। उसी प्रकार निवेश खातों को भी ऐसे ही संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है।

यह मार्गदर्शिका आपको धनी बनाने की कोई योजना नहीं है। इसका उद्देश्य केवल इतना है कि आप अन्ततः चैन की साँस ले सकें। यह आपको अपनी मुद्रियाँ इतनी कसकर भिचकर रखने की प्रवृत्ति छोड़ने में सहायता करने के लिए है। यह इस बात को सीखने के विषय में है कि वास्तव में "अपने" संसाधनों को खुले हाथों से थामने का क्या अर्थ है।

मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसे लोगों को जानता हूँ जिनके पास उनकी आवश्यकता से कहीं अधिक बढ़कर धन था, फिर भी वे अत्यन्त अशान्त और चिन्ताग्रस्त जीवन जीते थे। और मैं ऐसी विधवाओं को भी जानता हूँ जिनके पास लगभग कुछ भी नहीं था, फिर भी वे उदारता के साथ देती थीं और निश्चिन्त होकर सो जाती थीं। अन्तर धन की मात्रा में कभी नहीं था। अन्तर स्वामित्व की समझ में था। वे भली-भाँति जानती थीं कि वह धन वास्तव में किसका है।

इस यात्रा में हम "कटनी के ईश्वर विज्ञान" पर विचार करेंगे। हम उन मूर्तियों की भी पहचान करेंगे जो प्रायः सबसे सम्मानजनक निवेशों के भीतर भी छिपी रहती हैं। और हाँ, हम इस विषय पर भी व्यावहारिक रूप से विचार करेंगे कि किस प्रकार निवेश किया जाए ताकि अन्ततः भीतर से खोखले न हो जाएँ।

यह यात्रा सरल या सुव्यवस्थित नहीं होगी। मैं अभी से आपको बता देता हूँ कि सम्भव है, इस दौरान आपको ऐसे अनेक क्षेप दिखाई देंगे जहाँ भय या लोभ ने आपकी अपेक्षा कहीं अधिक समय तक आपके जीवन का संचालन किया है। परन्तु सुनिश्चित—यह असफलता नहीं है। यह तो केवल ईमानदारी है। वास्तविक विश्वास का मार्ग शायद ही कभी पूरी रीति से व्यवस्थित होता है, है न? परन्तु इस कार्य के लिए अनुग्रह उपलब्ध है। और इसके उस पार एक वास्तविक, गहरी शान्ति आपकी प्रतीक्षा कर रही है। आइए, यहीं से आरम्भ करते हैं।

1

धन के विषय में बाइबल आधारित ईश्वरविज्ञान - हम धन क्यों अर्जित करते हैं

वृद्धि के ईश्वरीय उद्देश्य: हम कार्य और निवेश क्यों करते हैं

मनुष्य वस्तुओं में वृद्धि इसलिए करता है क्योंकि उसे इसी उद्देश्य से रचा गया है। यह मानो उसके स्वभाव का ही एक अंग है। यह प्रवृत्ति किसी आधुनिक बाज़ार-व्यवस्था या अर्थशास्त्र की किसी पाठ्यपुस्तक से उत्पन्न नहीं हुई है। नहीं, यह तो आदि से ही विद्यमान थी। परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में रखा और उससे केवल इतना कहा कि वह परिश्रम करे—उसकी देखभाल करे और जो कुछ उसे सौंपा गया है, उसका उचित उपयोग करके उसे फलवन्त करे।

क्या वृद्धि बाइबल में कभी कोई बुरी बात रही है? कदापि नहीं। यह तब जटिल और विकृत हुई जब भय और पाप ने मानो भूमि को ही दूषित कर दिया था। आज हममें से अधिकांश लोग—और सम्भव है कि आप भी—यहीं आकर उलझ जाते हैं। हमें समझ में नहीं आता कि किसी बात में वृद्धि करना विश्वासयोग्यता का चिन्ह है या फिर वह वास्तव में एक जोखिम भरा कार्य है। क्या यह बुद्धिमानी है... या फिर केवल लोभ है, जिसके विषय में बाइबल चेतावनी देती है?

इसी भ्रम के कारण लोग प्रायः दो में से किसी एक चरम स्थिति में पहुँच जाते हैं। या तो वे बिना किसी संयम के उन्नति करने के पीछे दौड़ते हैं, या उससे पूरी तरह दूर रहकर उसी को "विश्वास" का नाम दे देते हैं। परन्तु बाइबल इनमें से किसी भी मार्ग का समर्थन नहीं करती है। वह हमें इस पूरे विषय को देखने की कहीं अधिक ठोस और वास्तव में कहीं अधिक सच्चाई की दृष्टि प्रदान करती है। वह हमें सिखाती है कि बाइबल के सिद्धान्तों के अनुसार विभिन्न प्रकार के निवेशों के द्वारा बुद्धिमानी से कैसे निवेश करें। जब हम धन के विषय में बाइबल की शिक्षाओं पर ध्यान देते हैं, तो स्पष्ट हो जाता है कि भविष्य के लिए बचत करना बाइबल के अनुसार उचित है, यदि हम यह समझें कि धन का संचय करने और पीढ़ियों तक बने रहने वाले धन के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है। इसी प्रकार, ऋण के विषय में बाइबल की शिक्षाएँ हमें उन फन्दों से बचना सिखाती हैं जो हमें उस कार्य से विमुख कर देते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने हमें ठहराया है।

भण्डारीपन और स्वामित्व: स्वामी के धन को समझना

मत्ती 25 में तोड़ों का दृष्टान्त स्पष्ट करता है कि हम स्वामी नहीं हैं। आरम्भ से ही प्रभु यीशु हमें यही शिक्षा देता है। एक स्वामी अपने दासों को अपना धन सौंपकर याला पर चला जाता है। वे दास न तो नियम निर्धारित करते हैं और न ही स्वामी की व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं। उन्हें जो कुछ सौंपा गया है, उसे वे ग्रहण करते हैं और उसके अनुसार कार्य करने की उनसे

बुद्धिमानी से निवेश करना

अपेक्षा की जाती है। यह दृष्टान्त स्वयं की अभिव्यक्ति के लिए या जीवन में अपने व्यक्तिगत उद्देश्य की खोज के विषय में नहीं है। यह स्वामी के अधिकार के अधीन भण्डारीपन के विषय में है।

वह धन किसी और का है। दास उसके स्वामी नहीं थे, वे केवल उसके प्रबन्धक हैं। और सच तो यह है कि जीवन को इस दृष्टिकोण से देखना हमें गम्भीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करता है। इस समय जो कुछ आपके हाथ में है—जैसे धन, कौशल, अवसर और समय—वह आपके होने से पहले ही परमेश्वर का है। जिस व्यवस्था में आप कार्य कर रहे हैं, उसे आपने नहीं बनाया; आपको तो केवल उसमें रखा गया है। और एक दिन उसका लेखा-जोखा देना होगा।

ध्यान दीजिए कि प्रभु यीशु उन दासों की निन्दा नहीं करता जिन्होंने जोखिम उठाया और स्वामी के धन को बढ़ाया। वरन् उसने उनकी प्रशंसा की। उसने उस दास की निन्दा की जिसने उसे भूमि में गाड़ दिया था। क्यों? इसलिए नहीं कि उसने धन खो दिया था, परन्तु इसलिए कि उसने अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ही नहीं किया। उसने वास्तविक विश्वासयोग्यता के स्थान पर तथाकथित "सुरक्ष" को चुन लिया। उसने धन तो सुरक्षित रखा, परन्तु जो कार्य उसे सौंपा गया था, उसमें वह असफल रहा। यह बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वह दास उतावला या लापरवाह नहीं था; वह अत्यधिक सावधान था। परन्तु जब सावधानी उत्तरदायित्व से विमुख हो जाए, तब वह प्रशंसा के योग्य नहीं रहती। यह दृष्टान्त इस भ्रम को दूर कर देता है कि निष्क्रिय बने रहना भी कोई विकल्प है। कुछ न करना भी एक निर्णय है। जब वृद्धि की अपेक्षा की गई हो, तब उन्नति करने से इन्कार करना भी आज्ञा का पालन न करने का ही एक रूप है। परमेश्वर ने जब फल की अपेक्षा की, तब केवल उसे सुरक्षित रख देने से वह प्रसन्न नहीं होता। इसका यह अर्थ नहीं कि किसी भी मूल्य पर उन्नति की जाए। इसका अर्थ केवल इतना है कि जो कुछ आपको सौंपा गया है, यह जानते हुए उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें, कि उसे मिट्टी में छिपा देने के लिए वह कभी आपका था ही नहीं।

आर्थिक संघर्ष: पतन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए संघर्षों का सामना

यदि उन्नति वास्तव में इतनी सरल होती, तो हमें विश्वास की आवश्यकता ही न होती, क्यों सही है न? उत्पत्ति 3 हमें बताता है कि अब सब कुछ वैसा क्यों नहीं चलता है जैसा चलना चाहिए। भूमि शापित हो गई। उसमें कोंटे और ऊँटकटारे उगने लगे। परिश्रम के साथ पसीना बहने लगा है और बहुत-सी अनिश्चितताएँ भी जुड़ गई हैं। जोखिम अब जीवन का एक हिस्सा बन गया है, और निवेश, बाजार तथा धन के विषय में विचार करते समय इस बात का विशेष महत्त्व है।

पवित्रशास्त्र हमारे साथ स्थिरता का नहीं, परन्तु वास्तविकता की प्रतिज्ञा करता है। बाजार गिरते हैं क्योंकि संसार पतित है। व्यवसाय असफल होते हैं क्योंकि मनुष्य पतित है। निवेश का मूल्य घट जाता है क्योंकि इस वर्तमान युग में कोई भी वस्तु नष्ट होने के प्रभाव से अछूती नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं कि योजना बनाना मूर्खता है; कदापि नहीं। परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि हमारी योजनाओं में नम्रता होनी चाहिए। जोखिम कोई आधुनिक आविष्कार नहीं है; वह मनुष्य के पतन का प्रत्यक्ष परिणाम है। और पवित्रशास्त्र हमें कभी यह नहीं सिखाता कि हम उसे पूरी रीति से समाप्त करने का प्रयास करें। वह हमें उसे स्वीकार करने की शिक्षा देता है।

मैंने स्वयं ऐसे लोगों से बात की है जो सचमुच यह विश्वास करते थे कि विश्वासयोग्य मसीही लोग आर्थिक दृष्टि से सदैव सफल ही होते हैं। परन्तु जब अन्ततः उन्हें हानि उठानी पड़ी, तब उन्होंने केवल धन ही नहीं खोया; परन्तु उनका आधार ही डगमगा

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

गया। उनके ईश्वर विज्ञान में कौंटों के लिए कोई स्थान ही नहीं था। परन्तु बाइबल ऐसी भूल कभी नहीं करती है। सभोपदेशक 11:2 स्पष्ट रूप से बताता है कि अपने निवेशों को अलग-अलग स्थानों पर लगाओ—अर्थात् उनमें विविधता रखो—क्योंकि आप नहीं जानते कि पृथ्वी पर कब कौन-सी विपत्ति आ पड़े। नीतिवचन 12:24 परिश्रम की प्रशंसा अवश्य करता है, परन्तु वह कभी सफलता की प्रतिज्ञा नहीं करता है।

यीशु धन के विषय में जो भी दृष्टान्त सुनाता है, उनमें अनिश्चितता को एक स्वाभाविक पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करता है। विश्वास का अर्थ यह नहीं है कि हम यह दिखावा करें कि वास्तविकता उससे अधिक सुरक्षित है, जितनी वह सचमुच है। विश्वास का अर्थ यह है कि हम फिर भी परिश्रम करते रहें, यह जानते हुए कि कठनी पर भी परमेश्वर का ही प्रभुत्व है। जोखिम का अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर उपस्थित नहीं है। इसका अर्थ केवल इतना है कि हम अब भी अदन के पूर्व के संसार में रह रहे हैं, अर्थात् हम अब भी पतित संसार में रह रहे हैं।

राज्य की वृद्धि तथा विस्तार का वास्तविक उद्देश्य

यहीं से हमारे उद्देश्य वास्तव में महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। आइए, इसे स्पष्ट रूप से स्वीकार करें: निवेश का उद्देश्य धन का संचय करते जाना नहीं है। पवित्रशास्त्र कभी भी केवल अधिक पाने के लिए वस्तुओं का ढेर लगाने को आशीष नहीं देता है। वास्तविक उन्नति का उद्देश्य हमारी क्षमता को बढ़ाना है, उस क्षमता को, जिसके द्वारा हम उन सब वस्तुओं के विश्वासयोग्य भण्डारी बन सकें जो हमें सौंपी गई हैं। जब आपके पास अधिक साधन होते हैं, तब आपका उत्तरदायित्व भी बढ़ जाता है। इसका उद्देश्य अधिक सुख-सुविधा प्राप्त करना नहीं, परन्तु आपकी सेवा और प्रभाव के क्षेत्र का विस्तार होना है। तब विपत्तियाँ आप पर भी आपका जीवन डगमगाता नहीं है। तब आप भयभीत हुए बिना उदारता के साथ दे सकते हैं। और यही अतिरिक्त क्षमता आपको उस समय सहायता करने के योग्य बनाती है, जब आपके सामने कोई वास्तविक आवश्यकता होती है।

जिन दासों ने स्वामी के धन को दुगुना कर दिया था, उनकी प्रशंसा इसलिए नहीं की गई कि उन्होंने स्वामी को और अधिक धनी बना दिया था या धन की मात्रा बढ़ा दी थी। उनकी प्रशंसा इसलिए की गई कि वे ऐसे व्यक्ति सिद्ध हुए जिन पर और अधिक उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता था। उनकी क्षमता बढ़ गई थी। निवेश के विषय में यही बाइबल आधारित वास्तविक तर्क है। उन्नति अपने आप में उद्देश्य नहीं है; वह तो एक साधन है, जिससे आप एक बड़े उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं।

अतः जब इन सब बातों को एक ओर रख दिया जाए, तब वास्तव में बाइबल क्या कहती है? वह कहती है: कि विश्वासयोग्य बने रहो, बुद्धिमानी से चलो, अपने हृदय को नम्र रखो, और सबसे बढ़कर यह कभी मत भूलो कि धन आरम्भ से ही तुम्हारा नहीं था। पवित्रशास्त्र हमें कभी यह आज्ञा नहीं देता कि किसी भी मूल्य पर “अधिक से अधिक प्रतिफल” प्राप्त करने का प्रयास करो। वह हमें यही बताता है कि जो कुछ आपको सौंपा गया है, उसका बुद्धिमानी और साहस के साथ विश्वासयोग्य भण्डारी बने रहो। वह कभी सुरक्षा की प्रतिज्ञा नहीं करता है। (उसने कभी ऐसी प्रतिज्ञा नहीं की) परन्तु वह उत्तरदायित्व का लेखा देने की प्रतिज्ञा अवश्य करता है। वह कभी यह नहीं कहता कि “विश्वास” का अर्थ निष्क्रिय बने रहना या कुछ न करना है। परन्तु वह इसके ठीक विपरीत शिक्षा देता है। बाइबल उन लोगों की प्रशंसा करती है जो पहले से योजना बनाते हैं और तैयारी करते हैं, तथा साथ ही उन लोगों को चेतावनी देती है जो अपने ही धन की उपासना करते हैं, यह एक आज्ञाकारी होने का विषय है; दूसरा केवल अपनी पहचान के संकट का विषय है।

बुद्धिमानी से निवेश करना

जब धन-दौलत बढ़ने लगती है, तब प्रश्न और भी अधिक तीखे हो जाते हैं, है न? तब मन में ऐसे प्रश्न उठने लगते हैं: "क्या इससे मैं और अधिक उदार बन रहा हूँ, या केवल स्वयं के लिए और अधिक रक्षात्मक होता जा रहा हूँ?" क्या मैं लोगों के लिए पहले से अधिक उपलब्ध हूँ, या केवल इस चिन्ता में घिरता जा रहा हूँ कि जो कुछ मेरे पास है कहीं उसे भी न खो दूँ? क्या मैं परमेश्वर के राज्य के लिए जोखिम उठाने को पहले से अधिक तैयार हूँ, या केवल उसी को बचाए रखने की धुन में लगा हुआ हूँ, जिसे मैं अपना बनाया हुआ समझता हूँ?

देखिए, वृद्धि केवल यह प्रकट करती है कि आपके हृदय में पहले से क्या विद्यमान था। फसल का उद्देश्य कभी केवल उसे खलिहान में भरकर रखना नहीं होता है; उसका उद्देश्य तो भोजन की मेज तक पहुँचना होता है। इसका अभिप्राय यह है कि आपके पास लोगों का पालन-पोषण करने, उत्तम कार्यों में अपने साधनों का उपयोग करने, और अभाव के समय भय से जकड़े बिना दृढ़ बने रहने की सामर्थ्य हो। इसका अर्थ यह भी है कि इस संसार में, जहाँ आवश्यकताएँ निरन्तर बढ़ती रहती हैं, उसमें आप विश्वासयोग्य बने रहने की क्षमता रखें। परमेश्वर वस्तुओं में वृद्धि इसलिए करता है क्योंकि उसका अभिप्राय यह है कि उनका उपयोग किया जाए। और वह यह वृद्धि उन लोगों को सौंपता है जिनसे वह उसके सदुपयोग होने की अपेक्षा करता है, न कि उन लोगों को जो उसे मिट्टी में दबा देते हैं। यही वास्तव में फसल का ईश्वरीय विज्ञान है।

2

बाजार की मूर्तियाँ

अपनी सम्पत्ति के विषय में अपने हृदय की जाँच

धन बहुत चुपके से वहाँ भी अपना स्थान बना लेता है जहाँ उसका कोई स्थान नहीं होना चाहिए। वह केवल आपके बटुए तक सीमित नहीं रहता; वह आपके हृदय, आपकी कल्पनाओं, यहाँ तक कि आपकी नींद में भी प्रवेश कर जाता है। वह किसी बड़े प्रदर्शन के साथ नहीं आता। परन्तु वह चुपचाप आकर बस जाता है और धीरे-धीरे मन में सूक्ष्म प्रतिज्ञाएँ फुसफुसाने लगता है।

अधिकांश लोग एक सुबह उठकर यह निर्णय नहीं कर पाते कि अब वे बाजार की उपासना करना आरम्भ करेंगे। यह तो धीरे-धीरे और चुपचाप होने वाला भटकाव है। पहले आप उस पर आवश्यकता से कुछ अधिक ध्यान देने लगते हैं। फिर एक समय ऐसा आता है कि आप प्रार्थना करने की अपेक्षा अपनी स्क्रीन पर दिखाई देने वाले आंकड़ों को कहीं अधिक बार देखने लगते हैं। जब सब कुछ बढ़ रहा होता है, तब आपको एक प्रकार की "शान्ति" का अनुभव होता है; और जैसे ही गिरावट आती है, आपका शरीर तनाव से भर जाता है और आपका मन चिन्ता से व्याकुल हो उठता है। यही वह संकट है जो तब उत्पन्न होता है जब हम यह भूल जाते हैं कि धन के विषय में बाइबल की आयतें वास्तव में हमें किस बात के लिए सावधान करती हैं।

धीरे-धीरे एक समय ऐसा आ जाता है जब धन वह साधन नहीं रह जाता जिसका आप उपयोग करते हैं, परन्तु वह ऐसा देवता बन बैठता है जिसकी आप सेवा करने लगते हैं। यही कारण है कि पवित्रशास्त्र बार-बार इसी विषय पर लौटता है। इसका कारण यह नहीं कि धन अपने आप में बुरा है, परन्तु यह कि उसका प्रभाव अत्यन्त प्रबल होता है। वह छल पूर्वक मन को अपनी ओर आकर्षित करता है। परन्तु अन्ततः वह कभी सन्तुष्टि नहीं दे सकता। वह एक अयोग्य देवता है, क्योंकि जब आपको उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है, तब वह आपकी सहायता नहीं कर सकता। इसके स्थान पर आपको स्वर्गीय धन-सम्पत्ति की आवश्यकता है। हाँ, जैसा कि जॉन पाइपर बल देकर कहते हैं, कि इसका उपाय संसार का त्याग करके कठोर तपस्या करना नहीं, परन्तु अपने हृदय की दिशा को परमेश्वर की ओर फेरना है। धन की पकड़ से वास्तविक स्वतंत्रता तब मिलती है जब हम धन की उपस्थिति से अधिक परमेश्वर की उपस्थिति में आनन्द लेना सीखते हैं। जब हम सचमुच समझ लेते हैं कि धन के विषय में बाइबल क्या कहती है, तब हमें उन मूर्तियों को छोड़ देने की सामर्थ्य प्राप्त होती है जिन्हें हमने स्वयं खड़ा कर लिया है।

धन का मनोविज्ञान: "पर्याप्त" की खाई को पार करना

देखिए, एक ऐसी खाई है जो कभी भरती हुई नहीं दिखाई देती है—चाहे आपके पास कितना भी धन आता रहे या आपने हर बात की कितनी ही सावधानी से योजना क्यों न बनाई हो। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि आप स्वयं को कितना ही उत्तरदायी क्यों न मानते हों। परन्तु आपको हमेशा ऐसा लगेगा कि आपके पास अभी जितना है, उससे थोड़ा और अधिक होना ही अधिक सुरक्षित होगा। लोग "पर्याप्त" शब्द का प्रयोग तो बहुत करते हैं, परन्तु वास्तव में वे स्वयं भी नहीं जानते कि उससे उनका अभिप्राय क्या है। किस बात के लिए पर्याप्त? कितने समय के लिए पर्याप्त? और भविष्य की किस परिस्थिति के लिए पर्याप्त?

वास्तविक समस्या यह नहीं है कि लोग बुद्धिमान या तैयार रहना चाहते हैं। समस्या यह है कि भय एक अथाह गड्ढे के समान है। आप बीस वर्षों तक उसे संतुष्ट करने का प्रयास करें, फिर भी वह अगले दिन और अधिक की माँग करते हुए भूखा ही जागेगा।

मैंने स्वयं ऐसे लोगों को देखा है जिन्होंने वे उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं जिनका कभी उन्होंने केवल स्वप्न ही देखा था; परन्तु वहाँ पहुँचने के बाद भी उन्हें चिन्ता के अतिरिक्त और कुछ अनुभव नहीं हुआ। जो चैन उन्हें मिला, वह ठिक न सका। भय तो केवल अपना रूप बदल लेता है। वह नए प्रश्न पूछने लगता है। यदि बाजार में गिरावट आ जाए तो क्या होगा? यदि मुद्रास्फीति यह सब निगल जाए तो क्या होगा? यदि मेरे साथ कुछ हो जाए तो क्या होगा? यदि अन्ततः यह भी पर्याप्त न हो तो क्या होगा? यही वह खाई है। जिसे धन या आंकड़ों से कभी नहीं भरा जा सकता है।

हम पवित्रशास्त्र के इस सत्य को जितना अधिक स्वीकार करना चाहते हैं, पवित्रशास्त्र इसे उससे कहीं अधिक भली-भाँति समझता है। यीशु ने उन लोगों के विषय में कहा जो अपने लिए धन-दौलत का ढेर लगा रहे थे, परन्तु अपने प्राणों की हानि उठा बैठे—इसका कारण यह नहीं था कि वे लापरवाह या असावधान थे, परन्तु यह था कि वे कभी रुक ही न सके। बनाने के लिए सदा एक और खलिहान शेष रहता था। जोड़ने के लिए सदा एक और "सुरक्षा कोष" शेष रहता था। देखिए, बाजार आपको कभी यह नहीं बता सकता कि विश्राम करने का समय कब है। वह ऐसा करना जानता ही नहीं है। वह तो हर बार आपको रात भर जागते रहने का एक नया कारण दे देगा। यदि आपकी शान्ति इस बात पर निर्भर है कि आप किसी निश्चित संख्या तक पहुँच जाएँ, तो मैं आपको बता दूँ कि—वह शान्ति सदा आपकी पहुँच से बाहर ही रहेगी। क्योंकि धन कभी सन्तुष्ट नहीं दे सकता है। वह आकर्षित तो करता है, परन्तु कभी सन्तुष्ट नहीं करता। जैसे ही आप उस काल्पनिक "अब पर्याप्त है" वाली संख्या तक पहुँचते हैं, वह बदल जाती है। बार-बार वह संख्या बदल जाती है। जब सबसे धनी लोगों से भी पूछा गया, कि "सन्तुष्ट होने के लिए कितना पर्याप्त है?" तो उनका उत्तर था, "बस सौ रुपए और।"

विश्वास और आत्मनिर्भरता: अपने ही बल पर जीने के मिथक का खण्डन

धन सामान्यतः लोगों को इस प्रकार घमण्डी या अहंकारी नहीं बनाता कि हर कोई उसे स्पष्ट रूप से देख सके। वह इससे कहीं अधिक सूक्ष्मता से कार्य करता है। वह तो चुपचाप लोगों को आत्मनिर्भर बना देता है। व्यवस्थाविवरण 8 की यही बड़ी चेतावनी है। परमेश्वर ने इस्त्राएल को पहले ही बता दिया था कि जब उनके जीवन में समृद्धि आने लगेगी, तब क्या होगा।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

पेट भरकर भोजन होगा। सुरक्षित घर होंगे। उपजाऊ भूमि होगी। सब कुछ उत्तम दिखाई देगा। और फिर? तब संकट होगा।

चेतावनी यह कहती है, "तू अपने मन में यह न कहना, 'मेरी सामर्थ्य और मेरे हाथ के बल ने मेरे लिए यह धन अर्जित किया है।'" ध्यान दीजिए, यह विचार कहाँ उत्पन्न होता है। यह किसी सार्वजनिक भाषण में नहीं प्रकट होता; वह तो चुपचाप हृदय में ही स्थान बना लेता है। अपने ही बल पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति शायद ही कभी विद्रोही प्रतीत होती है। वह तो बहुत उचित, उत्तरदायित्व पूर्ण और शान्त दिखाई देती है। आप पहले के समान प्रार्थना करना छोड़ देते हैं, क्योंकि आपको लगता है कि सब कुछ व्यवस्थित है। आप परमेश्वर से "प्रतिदिन की रोटी" माँगना भी छोड़ देते हैं, क्योंकि आपके भण्डार में पहले से ही बहुत कुछ भरा हुआ है। आप अब भी उस पर विश्वास तो करते हैं, परन्तु वास्तव में आप स्वयं को उस पर निर्भर होने का अनुभव नहीं करते हैं।

यही वह परिवर्तन है जिसके विषय में पवित्रशास्त्र हमें सावधान करता है। सच तो यह है कि किसी पर निर्भर रहना हमें सहज नहीं लगता। ऐसा सदैव से रहा है। यही कारण है कि धन इतना प्रलोभनकारी होता है, कि वह हमें ऐसा अनुभव कराता है मानो बिना किसी से सहायता माँगे ही हम सुरक्षित रह सकते हैं। और इसमें परमेश्वर भी सम्मिलित है।

मैंने स्वयं ऐसे लोगों के साथ समय बिताया है जिन्हें तब तक यह भी पता नहीं चला कि यह प्रवृत्ति उनके भीतर कितनी गहराई तक घर कर चुकी है, जब तक कि किसी घटना ने उनके नियन्त्रण के भाव को झकझोर नहीं दिया। कभी बाजार में गिरावट आई, कभी स्वास्थ्य से जुड़ी कोई गंभीर समस्या सामने आ गई, तो कभी अचानक कोई बड़ी हानि उठानी पड़ी। उन क्षणों में केवल भय ही प्रकट नहीं हुआ; परन्तु उन्हें गहरा आश्चर्य भी हुआ। धीरे-धीरे, लगभग अनजाने में ही सही, पर वे इस प्रकार जीवन जीने लगे थे मानो परमेश्वर पर निर्भर रहना आवश्यक ही न हो, अर्थात् परमेश्वर एक विकल्प के रूप में हो।

व्यवस्थाविवरण 8 धन की निन्दा नहीं करता; वह भूल जाने की प्रवृत्ति के विषय में चेतावनी देता है। यह उस परमेश्वर को भूल जाने के विषय में है जिसने सबसे पहले आपको यहाँ तक पहुँचाया है। उसे भूल जाने के विषय में है जिसने उस समय भी आपको सम्भाले रखा जब आपके पास कुछ भी नहीं था। यह इस बात को भूल जाने के विषय में है कि प्रत्येक उत्तम वस्तु का प्रबन्ध करने से पहले वह आपको प्रदान की गई थी। धन वास्तव में आपको परमेश्वर पर निर्भर रहने से स्वतंत्र नहीं करता। वह केवल उस निर्भरता को छिपा देता है। और जब यह आवरण इतना प्रभावशाली हो जाता है कि वह हमें धोखा देने लगे, तब मन उस परमेश्वर के स्थान पर, जिसे वह देख नहीं सकता, उन वस्तुओं पर भरोसा करने लगता है जिन्हें वह अपनी आँखों से देख सकता है। इसलिए सावधान रहते हुए अपने आप को देखें कि आपके पास ऐसा क्या है जो आपको प्राप्त नहीं हुआ है?

आर्थिक विनाश से बचना: शीघ्र धनवान बनने के विरुद्ध बाइबल आधारित चेतावनी

यदि आत्मनिर्भरता वह मीन मूर्ति है जो पृष्ठभूमि में छिपी रहती है, तो उतावलापन वह है जो आपका ध्यान अपनी ओर खींचता है। बाइबल हमें शीघ्र धनी बनने की उतावली के खतरे के विषय में चेतावनी देती है, इसलिए नहीं कि शीघ्रता से आगे बढ़ना हर बार गलत होता है, परन्तु इसलिए कि यह प्रायः प्रकट करता है कि हमारे भीतर क्या चल रहा है। जब कोई

बुद्धिमानी से निवेश करना

व्यक्ति तुरन्त धनी बनने के लिए व्याकुल होता है, तो प्रायः उसका कारण यह होता है कि वह किसी बात से बच निकलना चाहता है—जैसे भय, लज्जा, तुलना, या पीछे छूट जाने की भावना। नीतिरचन इससे स्पष्ट करता है। वह शीघ्र प्राप्त किए गए धन की प्रशंसा नहीं करता; वरन् कहता है कि ऐसा धन घटता चला जाता है और अन्त में विपत्ति लाता है। तथा उतावलापन केवल शीघ्रता का ही विषय नहीं है। यह अवैध उपायों का सहारा लेने के विषय में भी हो सकता है। शीघ्र धनी बनने की योजनाएँ आकर्षक लगती हैं क्योंकि वे वास्तविक उन्नति के बिना राहत का, प्रक्रिया के बिना परिणाम का, और धैर्य के बिना नियन्त्रण की प्रतिज्ञा करती हैं। यह मेल केवल आपके धन के लिए ही नहीं, वरन् आपके प्राण के लिए भी जोखिम भरा है।

हर पीढ़ी यही प्रश्न पूछती है, कि "क्या इस बार बात अलग है? क्या यही वह छोटा मार्ग है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे?" इसका उत्तर लगभग हमेशा "नहीं" ही होता है। मैं लोगों को यह भी पूछते सुनता हूँ कि क्या शेयर बाजार में निवेश करना केवल "मसीही जुआ" है। बाइबल आज के वित्तीय शब्दों का प्रयोग नहीं करती, परन्तु वह हमें कुछ मूलभूत सिद्धान्त अवश्य देती है। जुआ संयोग पर निर्भर रहने और उत्तरदायित्व से बचने का प्रयास है, इस आशा में कि भाग्य आपको बचा लेगा। इसके विपरीत, जब निवेश बुद्धिमानी से किया जाता है, तो उसका अर्थ वास्तविक कार्य, वास्तविक मूल्य और समय के साथ होने वाली वास्तविक वृद्धि में सहभागी होना होता है। परन्तु सत्य यह है कि वही कार्य विश्वासयोग्य भी हो सकता है और अविश्वास योग्य भी; यह आपके उद्देश्य पर निर्भर करता है। यदि आप लोभ, धैर्य की कमी, या सब कुछ अपने नियन्त्रण में रखने की इच्छा से निवेश करते हैं, तो इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि आपका निवेश कितना अच्छा दिखाई देता है। मूर्ति तब भी वहीं बनी रहती है। परन्तु यदि आप बुद्धि, धैर्य और अपने साधनों का उत्तम उपयोग करने की सच्ची इच्छा के साथ निवेश करते हैं, तो वह बात बिल्कुल भिन्न हो जाती है।

वास्तविक बात यह है कि—पवित्रशास्त्र केवल इस बात पर नहीं ठहर जाता कि आप क्या कर रहे हैं। उससे कहीं अधिक बढ़कर, वह इस बात पर बहुत अधिक ध्यान देता है कि—मेरा अर्थ वास्तव में बहुत अधिक ध्यान देने से है—कि उसके पीछे कारण क्या है। जैसे कि उतावलापन? अधिकांश समय वह केवल ऐसे हृदय को प्रकट करता है जो परमेश्वर की प्रतीक्षा करते-करते पूरी रीति से थक चुका होता है। उसमें तुरन्त राहत पाने की व्याकुलता होती है। सुरक्षा—अभी चाहिए। प्रतिष्ठा—अभी चाहिए। और जब इस प्रकार की सब कुछ तुरन्त पा लेने की अभिलाषा हमारे जीवन पर अधिकार कर लेती है—तब वास्तविक विवेक पीछे छूट जाता है। अब निष्पक्ष होकर देखें—तो बाजार कुछ बातों में वास्तव में उपयोगी है। वह पूँजी के प्रवाह को सम्भव बनाता है, उत्पादकता को प्रतिफल देता है, और संसार में जो कुछ घट रहा होता है उसको प्रस्तुत करता है। परन्तु मैं इस बात पर जितना भी बल दूँ, वह कम है—वह उस आत्मिक उत्तरदायित्व को पूरा करने में पूर्ण रूप से असमर्थ है जिसे हम उस पर लादने का प्रयास करते हैं। वह आपको शान्ति नहीं दे सकता। वह आपको आपकी पहचान नहीं दे सकता। वह कभी यह नहीं बता सकता कि आपके लिए "पर्याप्त" कब होगा, मुख्यतः इसलिए कि बाजार स्वयं "पर्याप्त" शब्द का अर्थ नहीं जानता है। और निश्चय ही वह आपके भविष्य का भार नहीं उठा सकता है। जब हम उससे ये सब कार्य करवाने का प्रयास करते हैं...तब वह केवल एक साधन नहीं रह जाता; वरन् एक दयनीय छोटे देवता के समान व्यवहार करने लगता है—अर्थात् एक मूर्ति के समान।

यही कारण है कि बाइबल बार-बार हमें उसी मनोवृत्ति की ओर लौटाती है। जैसे कृतज्ञता। निर्भरता। धैर्य। उदारता। मेरा विचार है कि हमें इन्हें केवल ऐसे नैतिक गुणों के रूप में नहीं देखना चाहिए जिन्हें एकल करना पड़े। वरन् वे वास्तव में आपके विवेक की रक्षा करने वाले साधन हैं। आइए, इस बात को स्पष्ट रूप से समझें: धन कभी भी अच्छा देवता नहीं बन सकता है। वह बहुत कुछ माँगता है, वह पूरी रीति से अस्थिर है, और उसे आपके प्राण की थोड़ी भी चिन्ता नहीं है। परन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं है। वह बाजार के गिर जाने से भयभीत नहीं होता। जब परदे पर अंक लाल हो जाते हैं, तब वह घबराता नहीं है। वह यह अपेक्षा नहीं करता कि पहले आप अपना जीवन व्यवस्थित करें या अपना बैंक खाता सुरक्षित करें, तब जाकर उस पर भरोसा किया जाए। आइए, अपनी सम्पत्ति के विषय में अपने हृदय की जाँच करें। यह भयभीत होने का विषय नहीं है। वरन् यह अपने प्रति ईमानदार होने का विषय है—सचमुच पूरी ईमानदारी के साथ—इससे पहले कि बाजार की परिस्थितियाँ आपको ऐसा करने के लिए विवश कर दें।

आपको अपने आप से वे कठिन प्रश्न पूछने होंगे: जैसे “इस समय मैं वास्तव में किस पर भरोसा कर रहा हूँ? किस बात को खो देने से मुझे सबसे अधिक भय लगता है?” सचमुच, यदि परमेश्वर उन बातों में से किसी एक को आपसे ले ले, तो क्या उसके साथ आपका सम्बन्ध पूरी रीति से टूट जाएगा, या तब वह वास्तव में सच्चा सिद्ध होगा? ये ऐसे प्रश्न नहीं हैं जिन्हें केवल “एक बार” पूछ लेना पर्याप्त है। ऐसे प्रश्न हर समय बार-बार लौटकर आते हैं। क्योंकि मूर्तियाँ केवल एक बार में ही नष्ट होकर समाप्त नहीं हो जाती हैं। वे चुपचाप छिपी रहती हैं और इस अवसर की प्रतीक्षा करती हैं कि आप तनाव में पड़ें। उद्देश्य बाजार से भाग जाना नहीं है। वरन् उसके बीच से जागरूक होकर चलना है। इस प्रकार निवेश करना है कि अंकों को अपनी आराधना की वेदी न बना लें। इस प्रकार बढ़ना है कि परिणामों को पकड़े रहने की व्याकुलता में न जकड़े रहें। इसका अर्थ है कि सब कुछ बन्द मुट्ठी से पकड़ने के स्थान पर खुले हाथों से थामे रखें। यह बात हममें से किसी के लिए भी स्वाभाविक नहीं है। इसे धीरे-धीरे सीखना पड़ता है। प्रायः कुछ ऐसी “कठिन शिक्षाओं” के द्वारा जो गहरी पीड़ा तो देती हैं। परन्तु मैं आपसे कहता हूँ, कि यह परिश्रम सार्थक है। क्योंकि यदि आप अनुमति देंगे, तो बाजार आपके हृदय पर अधिकार करने का प्रयास करेगा। और पवित्रशास्त्र एक बात को स्पष्ट करता है: केवल परमेश्वर ही आपके हृदय का अधिकारी है और वही इसके योग्य है।

3

बुद्धिमानी से निवेश करना - वित्तीय बुद्धिमानी के लिए बाइबल आधारित सिद्धांत

व्यावहारिक सिद्धान्त

बुद्धिमानी महत्वाकांक्षा की अपेक्षा अधिक शान्त प्रतीत होती है। वह उतावली नहीं करती। वह अपनी बढ़ाई नहीं करती। वह शायद ही कभी स्वयं को प्रकट करती है। अधिकांश समय बाहर से देखने पर वह साधारण सी लगती है। और यही समस्या का एक भाग है। लोग सामान्यतः बुद्धिमानी की अपेक्षा इसलिए नहीं करते क्योंकि वे उससे घृणा करते हैं। वे उसकी अपेक्षा इसलिए करते हैं क्योंकि वह उन्हें धीमी प्रतीत होती है। पवित्रशास्त्र कभी भी बुद्धिमानी को वैकल्पिक नहीं ठहराता, विशेषकर जब धन का विषय होता है। इसलिए नहीं कि धन कोई विशेष वस्तु है, वरन् इसलिए कि वह उतावलेपन को बहुत शीघ्र उजागर कर देता है।

आप अपने साधनों का जिस प्रकार उपयोग करते हैं, उससे प्रायः यह प्रकट होता है कि समय तथा नियन्त्रण और परमेश्वर के विषय में आपका विश्वास क्या है। यही कारण है कि मसीही लोग वित्तीय परामर्श प्रायः लेखे-जोखे की अपेक्षा हृदय पर अधिक ध्यान देते हैं। नीतिवचन कोई सूत्र नहीं देता। वरन् वह मनोवृत्ति सिखाता है। वह आपको यह सिखाता है कि ऐसे संसार में कैसे स्थिर बने रहें जहाँ परिणाम अनिश्चित होते हैं और प्रलोभन प्रबल होता है। वित्त के विषय में बाइबल के सिद्धान्तों का पालन करने से हम यह सीखते हैं कि वास्तविक सुरक्षा संग्रह करके रखने में नहीं, वरन् प्रदान करने वाले के चरित्र में पाई जाती है। यह दृष्टिकोण हमें इस संसार के साथ समाप्त हो जाने वाली बातों के स्थान पर उन बातों में निवेश करने के योग्य बनाता है जो स्थायी हैं, और महत्वाकांक्षा के शीघ्र तथा आकर्षक लाभों के पीछे दौड़ने से बचाता है। यह समझना कि बुद्धिमानी की दृष्टि से धन बचाने के विषय में बाइबल क्या कहती है, तथा हमें भय से निकालकर स्थिर और शान्त विश्वासयोग्यता की ओर ले जाती है।

विभिन्न स्थानों पर निवेश और परिश्रम

“सात को अपना भाग दे, वरन् आठ को भी।” सभोपदेशक 11 की उस पंक्ति को सदियों से दोहराया जाता रहा है, क्योंकि वह जीवन की वास्तविकता के अनुरूप है। आप नहीं जानते कि कौन सी विपत्ति आएगी। आप नहीं जानते कि कौन सा प्रयास असफल होगा और कौन सा सफल होगा। इसलिए आप अपना सब कुछ केवल एक ही परिणाम पर नहीं लगा देते और उसे विश्वास का नाम नहीं देते। अलग-अलग स्थानों पर निवेश करना कायरता नहीं है। यह बुद्धिमानी है। बाइबल कभी भी लापरवाही की प्रशंसा नहीं करती है। वह निष्क्रियता की भी प्रशंसा नहीं करती है। अलग-अलग स्थानों पर निवेश करना

इन दोनों के बीच का मार्ग है। मानो वह कहती है, "मैं परिश्रम करूँगा, परन्तु यह दिखावा नहीं करूँगा कि मैं भविष्य को देख सकता हूँ।" वह अपनी सीमाओं को स्वीकार करता है, परन्तु उत्तरदायित्व का त्याग नहीं करता।

अपना सब कुछ केवल एक ही स्थान पर लगा देना आकर्षक लगता है, क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता है कि आपने दृढ़ निर्णय ले लिया है। इससे आत्मविश्वास का आभास होता है। इससे नियन्त्रण का भ्रम उत्पन्न होता है। परन्तु पवित्रशास्त्र बार-बार हमें स्मरण कराता है कि परिणाम हमारे नियन्त्रण में नहीं हैं; केवल आज्ञाकारिता हमारे हाथ में है। परिश्रम का अर्थ है कि आप अपना कार्य करते रहें। योजना बनाएँ। विचार करें। जोखिम से इन्कार करने के स्थान पर उसे अलग-अलग स्थानों में बाँट दें। अलग-अलग स्थानों पर निवेश करना कोई ऐसी युक्ति नहीं है जिसमें भय छिपा हो। वरन् यह समय के साथ व्यवहार में लाई गई नम्रता है। मैंने लोगों को एक ही स्थान पर सब कुछ लगा देने को आत्मिक रूप देने का प्रयास करते हुए देखा है। "मुझे वास्तव में इसी एक बात पर विश्वास है।" कभी-कभी यह दृढ़ विश्वास होता है। परन्तु कभी-कभी यह केवल जिद होती है, जिसके ऊपर बाइबल की एक आयत चिपका दी गई होती है। बुद्धिमानी इससे भी कठिन प्रश्न पूछती है। "यदि यह असफल हो जाए तो क्या होगा? इसका मूल्य कौन चुकाएगा? क्या मैं कड़वाहट या निराशा हुए बिना इस हानि को सह सकता हूँ?" सभोपदेशक अनिश्चितता को स्वीकार करता है। वह उसके लिए क्षमा नहीं माँगता है। वह उससे सुरक्षा की प्रतिज्ञा नहीं करता। वरन् वह सिखाता है कि उसके बीच मानसिक संतुलन के साथ कैसे जीवन बिताया जाए। यही बुद्धिमानी है।

दीर्घकालीन निवेश: धैर्य और दूरदृष्टि की बुद्धिमानी

जब धन के आँकड़े सामने होते हैं, तब धैर्य आत्मिक बात नहीं प्रतीत होता। वह अप्रभावी लगता है। ऐसा लगता है मानो आप पीछे छूट रहे हैं। ऐसा लगता है कि अन्य सभी आपसे अधिक तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पवित्रशास्त्र धैर्य को अधिक आकर्षक बनाने के लिए उसकी नई परिभाषा नहीं देता। वह उसे सरल ही रहने देता है। धैर्य का अर्थ बिना अपने पाँव डगमगाते हुए प्रतीक्षा करना है। अर्थात् जब कोई विशेष की बात घटित नहीं हो रही होती है, तब भी स्थिर बने रहना। आत्मा का फल केवल सम्बन्धों पर ही लागू नहीं होता। वह इस बात पर भी लागू होता है कि आप समय का उपयोग किस प्रकार करते हैं। और धन इस बात की परीक्षा बहुत शीघ्र ले लेता है।

अधिकांश गलत निर्णय इसलिए नहीं लिए जाते कि लोगों के पास जानकारी का अभाव होता है। वे इसलिए लिए जाते हैं क्योंकि लोग प्रतीक्षा नहीं कर पाते हैं। वे तुरन्त राहत चाहते हैं। वे निश्चितता चाहते हैं। वे ऐसी प्रगति चाहते हैं जिसे वे अभी देख सकें। नीतिवचन उतावलेपन के विषय में बार-बार बात करता है, और कभी भी उसे अच्छा नहीं ठहराता। उतावलापन आवश्यक बातों की उपेक्षा करता है। उतावलापन चेतावनियों की उपेक्षा करता है। उतावलापन आने वाले कल को आज के लिए छोड़ देता है और उसे अवसर का नाम दे देता है। दीर्घकालिक दृष्टिकोण का अर्थ यह नहीं है कि कुछ भी न किया जाए। उसका अर्थ यह है कि वृद्धि में समय लगता है, और उसे बलपूर्वक बढ़ाने का प्रयास प्रायः उन बातों को भी बिगाड़ देता है जिन्हें बिगाड़ने का आपका कोई उद्देश्य नहीं था। इसका अर्थ यह भी है कि कभी-कभी साधारण प्रतीत होने वाला समय भी विश्वासयोग्यता का एक भाग होता है। मैंने धैर्य रखने वाले लोगों को उस समय तक मूर्ख कहलाते देखा है, जब तक कि उनकी स्थिरता का फल प्रकट नहीं हुआ। मैंने धैर्य की कमी वाले लोगों को भी कुछ समय के लिए अत्यन्त बुद्धिमान प्रतीत होते देखा है, परन्तु जब सब कुछ ढह गया, तब वे चुपचाप ओझल हो गए। दीर्घकालिक दृष्टिकोण यह समझती है

बुद्धिमानी से निवेश करना

कि परमेश्वर उतावली नहीं करता। उसका समय चिन्ता ग्रस्त नहीं होता। और जब प्रतीक्षा भरोसे के साथ की जाती है, तब वह व्यर्थ नहीं होती है।

निवेश में बाइबल आधारित नैतिक सिद्धान्त

यहीं से बातें असुविधाजनक होने लगती हैं, क्योंकि बुद्धिमानी केवल प्रतिफल पर ही नहीं रुकती। वह यह भी पूछती है कि वह प्रतिफल कहाँ से आता है। पवित्रशास्त्र कभी भी धन को नैतिकता से अलग नहीं करता। यह आधुनिक सोच है। बाइबल यह मानकर चलती है कि लाभ कभी भी नैतिकता से अलग नहीं होता। वह सदैव कहीं न कहीं से आता है। जैसे किसी के परिश्रम से। किसी की हानि से। किसी की आवश्यकता से। किसी की दुर्बलता से। क्या हमें इन बातों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए?

मैं एक मसीही सुसमाचार प्रचार-प्रसारक को जानता था, जो शेयर बाजार में निवेश करने वाले लोगों को धन उधार देता था। उसके अपने धन की सुरक्षा कानूनी दस्तावेजों और उधार लेने वाले के द्वारा गिरवी रखी गई सम्पत्ति से होती थी। परन्तु जब उससे कहा गया कि उसके निवेश के तरीके नैतिक दृष्टि से प्रश्नों के घेरे में हैं, तब भी उसने इस बात को स्वीकार नहीं किया।

यह सब एक कठिन प्रश्न खड़ा करता है। मैं वास्तव में किससे लाभ उठा रहा हूँ? विश्वास-आधारित निवेश चुनने का अर्थ केवल किसी ऐसी योजना को देखकर, जिस पर "मसीही" होने का ठप्पा लगा हो, यह मान लेना नहीं है कि वह शुद्ध है। इसका अर्थ सावधानी के साथ ध्यान देना है। इसका अर्थ है कि उन बातों से लाभ कमाने से इन्कार करना जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं, चाहे वे आर्थिक दृष्टि से कितना ही अच्छा प्रतिफल क्यों न दें। इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रत्येक निर्णय सरल होगा। हम एक जटिल आर्थिक व्यवस्था में रहते हैं। प्रत्येक सीमा-रेखा सदैव स्पष्ट नहीं होती। परन्तु कठिनाई उदासीनता का बहाना नहीं बन सकती है।

पवित्रशास्त्र लगातार परमेश्वर के लोगों को इस बात के लिए बुलाता है कि वे केवल इस बात की चिन्ता न करें कि धन का बाद में कैसे उपयोग किया जाएगा, वरन् इस बात की भी चिन्ता करें कि वह धन कैसे अर्जित किया गया है। यदि लाभ कमाने के लिए आपको अपने विवेक को अनदेखा करना पड़ा, तो बाद में उस लाभ से परमेश्वर का आदर करने का दावा करके उसे विश्वासयोग्यता नहीं कहा जा सकता है। मैंने लोगों को यह कहते हुए सुना है कि, "मैं इस धन का उपयोग अच्छे कामों के लिए करूँगा।" कभी-कभी यह बात सच होती है। लेकिन कभी-कभी यह उन प्रश्नों को दबाने का एक तरीका भी होता है जिनका सामना वे नहीं करना चाहते हैं। बुद्धिमानी आपको इतना ठहरने देती है कि आप फिर भी ये प्रश्न पूछें: मैं किसका समर्थन कर रहा हूँ? इससे किसे हानि पहुँच रही है? यदि मुझे पूरी बात पता हो, तो क्या तब भी मेरे मन में शान्ति बनी रहेगी? क्या मैं किसी बात को केवल इसलिए सही ठहरा रहा हूँ क्योंकि उससे मुझे लाभ हो रहा है? विश्वास आधारित निवेश का अर्थ नैतिक रूप से पूर्ण होना नहीं है। इसका सम्बन्ध खराई से है। इसका अर्थ है कि अपने विश्वास और अपने धन को इस प्रकार अलग न करना, मानो परमेश्वर को आपके जीवन के केवल एक ही भाग की चिन्ता हो।

बुद्धि की शब्दावली दिखावटी नहीं होती। विविधीकरण। धैर्य। नैतिकता। इनमें से कोई भी बात सुर्खियाँ नहीं बनाती हैं। ये तुरन्त परिणाम की प्रतिज्ञा नहीं करतीं। ये अहंकार को नहीं बढ़ाती। वरन् ये कुछ और ही करती हैं। ये आपको स्थिर बनाए

रखती हैं। ये ऐसे निर्णय लेने में आपकी सहायता करती हैं जिनके साथ आप बाद में भी निश्चिन्त रह सकें। ऐसे निर्णय जिन्हें बार-बार उचित ठहराने की आवश्यकता न पड़े। ऐसे निर्णय जो समय के साथ आपको भीतर से खोखला न कर दें। बुद्धि अपनी सीमाओं को स्वीकार करती है। वह समय का आदर करती है। वह लोगों की चिन्ता करती है। वह समझती है कि विश्वासयोग्यता उस समय प्रायः बहुत छोटी दिखाई देती है, पर पीछे मुड़कर देखने पर उसका महत्व स्पष्ट होता है।

नीतिवचन कभी यह प्रतिज्ञा नहीं करता कि बुद्धि आपको धनी बना देगी। वह यह प्रतिज्ञा करता है कि बुद्धि आपको अपने ही जीवन को नष्ट होने से बचाएगी। और बुद्धि ऐसा वरदान है जिसकी आवश्यकता बहुत से लोगों को तब तक समझ में नहीं आती जब तक बहुत देर नहीं हो जाती। धन सदा आपको छोटे और सरल मार्गों की ओर आकर्षित करेगा। बाजार प्रायः शीघ्रता को पुरस्कृत करेगा। परन्तु बुद्धि बार-बार एक भिन्न प्रश्न पूछती है। केवल यह नहीं, कि “क्या यह सफल होगा?” वरन् यह भी, कि “यदि मैं ऐसा करता रहूँ, तो मैं कैसा मनुष्य बन जाऊँगा?” उस प्रश्न का उत्तर किसी संख्या में नहीं दिया जा सकता। फिर भी पवित्रशास्त्र बार-बार वही प्रश्न हमारे सामने रखता है। और वह ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर हमें बहुत सावधानी और गम्भीरता से देना चाहिए।

4

बढ़ती हुई समृद्धि का प्रबन्धन

धन तथा संसाधनों के प्रबन्धन हेतु मार्गदर्शिका

एक समय ऐसा आता है जब वस्तुएँ बढ़ने लगती हैं। केवल थोड़ी सी ही नहीं, वरन् इतनी कि आप स्वयं उस बढ़ोतरी को स्पष्ट रूप से देखने लगते हैं। इतनी अधिक कि आपके निर्णय पहले से कहीं अधिक महत्व रखने लगते हैं। अधिक धन का प्रवाह होने लगता है। अधिक विकल्प सामने आने लगते हैं। अधिक लोग आपको यह बताने लगते हैं कि अब आपको आगे क्या करना चाहिए। यही वह समय होता है जब लोग प्रायः अस्थिर होने लगते हैं। इसलिए नहीं कि समृद्धि का बढ़ना बुरा है, वरन् इसलिए कि बढ़ती हुई समृद्धि बहुत सी बातों को प्रकट कर देती है। वह प्रकट करती है कि आपका भरोसा वास्तव में किस पर है। वह यह भी प्रकट करती है कि आपके मन में सबसे बड़ा भय किस बात का है।

जब बढ़ोतरी होने लगती है, तब यह प्रकट हो जाता है कि आप स्वयं को एक भण्डारी मानते हैं या ऐसा स्वामी मानते हैं जो अब अन्ततः कुछ राहत का अनुभव कर रहा है। बढ़ोतरी का प्रबन्ध करना चतुर बनने का विषय नहीं है। यह तब भी स्थिर बने रहने का विषय है जब दौंव पर पहले से अधिक लगा हुआ हो। ठीक इसी स्थान पर हमें यह पूछना चाहिए कि धन की बचत के विषय में बाइबल क्या कहती है, ताकि हम अनजाने में आत्मनिर्भरता की मनोवृत्ति में न फिसल जाएँ। जब धन की माला बढ़ती है, तब लोभ के विषय में बाइबल क्या कहती है, इसकी उपेक्षा करने का प्रलोभन भी प्रायः उसी के साथ बढ़ने लगता है।

सच्चे भण्डारीपन का अर्थ यह पहचानना है कि बढ़ी हुई समृद्धि अनन्त दृष्टिकोण के साथ निवेश करने का एक साधन है। इसका उद्देश्य केवल सुविधा प्राप्त करना नहीं, परन्तु भण्डारीपन के द्वारा ऐसी आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना है जो हमें दूसरों के लिए आशीष का कारण बनने और बाइबल के सिद्धान्तों के अनुसार आने वाली पीढ़ियों के लिए धन-संपत्ति तैयार करने में योग्य बनाए, अर्थात् इस प्रक्रिया में बिना अपने प्राणों को खोए हुए। स्थिर बने रहने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी सेवानिवृत्ति के लिए की गई बचत और अपनी प्रत्येक सम्पत्ति को परमेश्वर के हाथों में सौंपकर उस पर भरोसा रखें, और यह स्मरण रखें कि जब परिस्थितियाँ अत्यन्त चुनौतीपूर्ण हो जाती हैं, तब केवल अर्थव्यवस्था पर परमेश्वर का प्रभुता करने वाला अधिकार ही अटल बना रहता है।

सबसे पहले देना: धन के पहिलीते फल की सामर्थ्य

पवित्रशास्त्र एक विशेष कारण से सबसे पहले देने पर बल देता है। इसलिए नहीं कि परमेश्वर को धन की आवश्यकता है। उसे नहीं है। और इसलिए भी नहीं है क्योंकि उदारता से देने के बाद अधिक प्राप्त करने की कोई युक्ति है। कदापि नहीं है। सबसे पहले देना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि यह सच्चाई को बताती है। निवेश करने से पहले, योजना बनाने से पहले, और किसी भी प्रकार की वृद्धि करने से पहले, सबसे पहले देना एक सरल प्रश्न का उत्तर देता है। यह किसका है? पहिलीते फल देना बचे हुए में से देने के विषय में नहीं है। यह प्राथमिकता के विषय में है। यह व्यवहारिक रूप से स्वीकार करने का एक तरीका है कि जो कुछ आपके हाथों में है, उसका आरम्भ आपसे नहीं हुआ और उसका अन्त भी आप पर नहीं होता है। आप सबसे पहले इसलिए देते हैं, क्योंकि इससे प्राथमिकताओं का सही क्रम बना रहता है।

यदि आप दे नहीं सकते, तो आपको निवेश भी नहीं करना चाहिए। इसलिए नहीं कि निवेश करना पाप है, परन्तु इसलिए कि उदारता के बिना किया गया निवेश मन को कठोर बना देता है। वह आपको आपकी क्षमता तो बढ़ाना सिखाता है, परन्तु नियन्त्रण छोड़ना नहीं सिखाता है। यह मेल शायद ही कभी अच्छे परिणाम तक पहुँचता है, क्योंकि प्रत्येक भण्डारी को अन्ततः स्वामी के सामने अपना लेखा देना होता है। मैंने ऐसे बहुत से लोगों को देखा है जो धन बढ़ाने में तो अत्यन्त कुशल बन गए, परन्तु परमेश्वर पर भरोसा रखने में बहुत निर्धन रह गए। जब ईमानदारी से दिया जाता है, तब देना इस भटकाव को रोक देता है। यह आपको पहले ही अपनी पकड़ ढीली करना सिखाता है, इससे पहले कि आपकी संपत्ति बढ़ जाए और बढ़ाने अधिक दृढ़ हो जाएँ। देना आपको गैर-उत्तरदायी नहीं बनाता; यह आपको ईमानदार बनाता है। यह स्वीकार करता है, कि “इस बढ़ोतरी ने मुझे नहीं बचाया है, और न ही यह मुझे बचा सकती है। यह ऐसा कर ही नहीं सकती है।” जब सबसे पहले देने को स्थान दिया जाता है, तब निवेश अपने उचित स्थान पर बना रहता है। वह केवल एक साधन बना रहता है। उद्धारकर्ता नहीं, पहचान का आधार नहीं, परन्तु केवल उस वस्तु का प्रबन्ध करने का एक माध्यम बनता है जिसे परमेश्वर पहले ही आपको सौंप चुका है।

ऋण तथा बड़ा लाभ

यहीं से विषय गंभीर हो जाता है। ऋण कोई अमूर्त बात नहीं है। यह सम्बन्धों से जुड़ा हुआ होता है। आपके वहाँ पहुँचने से पहले ही यह आपके भविष्य पर अपना दावा कर देता है। यह आपके विकल्पों को सीमित कर देता है। यह आपकी संभावनाओं को कम कर देता है। और समय के साथ, यह चुपचाप आपके निर्णयों को ऐसे ढँग से प्रभावित करने लगता है, जिसका लोगों को प्रायः पता भी नहीं चलता है। पवित्रशास्त्र ऋण को हल्के में नहीं लेता है। इसलिए नहीं कि ऋण लेना सदैव पापमय होता है, परन्तु इसलिए कि बन्धन सदैव जोखिम भरा होता है। “उधार लेने वाला उधार देने वाले का दास होता है,” यह कोई काव्यात्मक कथन नहीं है; यह एक अवलोकन है। ऋण स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। और यदि आप अपने उत्तरदायित्वों की अनुमति पर निर्भर हुए बिना परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं, तो स्वतंत्रता का बहुत अधिक महत्व होता है।

मैं ऐसे लोगों के साथ बैठा हूँ जो देना चाहते थे, सहायता करना चाहते थे, आवश्यकता में पड़े लोगों की सहायता के लिए आगे बढ़ना चाहते थे, परन्तु वे ऐसा नहीं कर सके। इसलिए नहीं कि वे कंजूस थे, वरन् इसलिए कि वे ऋण के बोझ तले दबे हुए थे। उनके दृढ़ विश्वास से अधिक उनकी किस्सें बोल रही थीं। उधार ने पहले ही यह तय कर दिया था कि वे क्या कर

बुद्धिमानी से निवेश करना

सकते हैं और क्या नहीं। ऋण से छुटकारा पाना प्रायः एकाएक नहीं होता। यह धीरे-धीरे होता है। इसके लिए नम्र होना पड़ता है। इसके लिए उन वस्तुओं को भी न कहना पड़ता है, जिन्हें आप खरीद सकते हैं। इसके लिए ऐसे समाज में धैर्य रखना पड़ता है जो शीघ्रता से पुरस्कृत करता है। और ऐसा करने के लिए यह स्वीकार करना पड़ता है कि कुछ बढ़ोतरी आर्थिक संभावना पर नहीं, वरन् दबाव पर आधारित थी। ऋण तेजी से आगे बढ़ने की प्रतिज्ञा करता है। परन्तु प्रायः वह चिन्ता ही उत्पन्न करता है। इसका यह अर्थ नहीं कि हर प्रकार का ऋण लेना बुरा है। परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि आपको यह पूछना चाहिए कि ब्याज के अतिरिक्त ऋण की वास्तविक कीमत आपसे क्या वसूल रही है। क्या वह आपकी नींद छीन रही है? क्या वह आपकी उदारता को सीमित कर रही है? क्या वह आपको ऐसे निर्णयों में बाँध रही है जिन्हें आप लेना नहीं चाहते हैं? प्रबन्धन इन प्रश्नों को तब पूछता है, जब संख्याएँ अभी बड़ी नहीं हुई होती हैं। स्वतंत्रता स्थान देती है। देने का स्थान। दिशा बदलने का स्थान। जब परमेश्वर आपको किसी अप्रत्याशित कार्य की ओर प्रेरित करे, तब उसके अनुसार प्रतिक्रिया देने का स्थान। परन्तु जब ऋण बढ़ता जाता है, तब वह यह स्थान छीन लेता है।

आपातकालीन निधि तथा जोखिम का प्रबन्धन: कठिन समय के लिए तैयारी

बाइबल बचत करने का विरोध नहीं करती है। वह बचत पर उस प्रकार भरोसा करने का विरोध करती है, जिस प्रकार का भरोसा हमें परमेश्वर पर करना चाहिए। इन दोनों में अंतर है। कठिन समय के लिए तैयारी करना निराशावाद नहीं है। यह वास्तविकता को स्वीकार करना है। वस्तुएँ टूटती हैं। नौकरियाँ बदलती हैं। स्वास्थ्य बिगड़ता है। आपातकालीन परिस्थितियाँ अनुमति नहीं माँगती हैं। बाइबल कभी भी तैयारी को विश्वास की कमी नहीं कहती। यूसुफ ने अन्न का भण्डार तैयार किया। नीतिवचन चौटी की प्रशंसा करता है। यीशु यह मानकर चलता है कि लोग निर्माण करने से पहले लागत का हिसाब लगाते हैं। आपातकालीन निधि यह घोषणा नहीं है कि परमेश्वर आवश्यकताओं को पूरा नहीं करेगा। यह स्वीकार करने का एक तरीका है कि प्रावधान प्रायः उस बुद्धि के द्वारा आता है जिसका प्रयोग पहले से किया गया होता है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब बचत सुरक्षा का साधन बनने के स्थान पर अलगाव का साधन बन जाती है। जब संचित धन कठिन समय के लिए सहारा बने रहने के स्थान पर आपके और परमेश्वर पर निर्भर रहने के बीच एक दीवार बन जाता है।

आपातकालीन निधि के लिए कितनी धनराशि पर्याप्त होती है? कुछ वित्तीय सलाहकार तीन महीने के खर्च के बराबर की धनराशि रखने की सलाह देते हैं, जबकि अन्य छह महीने के खर्च के बराबर की धनराशि रखने की सलाह देते हैं। संभवतः सही राशि का निर्धारण करना इतना सरल नहीं होता है। परन्तु यह सलाह सहायक हो सकती है।

एक मसीही व्यक्ति की आपातकालीन निधि को एक ही समय में दो कार्य करने चाहिए। जब परिस्थितियाँ बिगड़ जाएँ, तब वह स्थिरता बनाए रखे। और साथ ही वह आपके हृदय को कोमल भी बनाए रखे। इसका अर्थ है कि आप घबराहट में नहीं, वरन् सोच-विचार के साथ बचत करें। आप अत्यधिक चिन्ता के बिना योजना बनाएँ। आप इस प्रकार तैयारी करें कि यह ऐसा दिखावा न करें कि आपने हर संभव परिस्थिति का समाधान कर लिया है। बचत का उद्देश्य आपकी सेवा करना है, प्रार्थना को मौन कर देना नहीं है। मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिन्होंने विश्वासयोग्यता के साथ बचत की और आपातकालीन परिस्थितियों का शान्त मन से, उदारता के साथ और बिना भय के सामना किया है। मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है जिन्होंने बचत को लेकर अत्यधिक चिन्ता की, फिर भी वे चिन्ता और सतर्कता से भरा जीवन जीते रहे। अन्तर कभी भी धनराशि के

आकार में नहीं था। अन्तर इस बात में था कि भरोसा कहाँ रखा गया था। कठिन समय के लिए तैयारी करना बुद्धिमानी है। परन्तु यह विश्वास करना कि आपने हर संकट को समाप्त कर दिया है, यह बुद्धिमानी नहीं है।

बढ़ोतरी का प्रबन्धन करना किसी प्रणाली में निपुण होने का विषय नहीं है। यह सही मनोवृत्ति की रक्षा करने का विषय है। जैसे-जैसे बढ़ोतरी होती चली जाती है, वैसे-वैसे उसके साथ परीक्षाएं भी बढ़ती चली जाती हैं। अर्थात् स्वयं पर निर्भर होने की परीक्षा। सब कुछ अपने नियंत्रण में रखने की परीक्षा। विश्वासयोग्यता के स्थान पर सुरक्षा को धन और संख्याओं से मापने की परीक्षा। यह सब एक ही बार में नहीं होता। यह धीरे-धीरे होता है। इसी कारण पवित्रशास्त्र बार-बार लोगों को सरल अभ्यासों की ओर लौटने के लिए कहता है। पहले दें। बंधन से दूर रहें। ईमानदारी से योजना बनाएँ। परमेश्वर पर भरोसा बनाए रखें। ये कोई उन्नत युक्तियाँ नहीं हैं। ये सुरक्षा के उपाय हैं। यही जीवन है।

बढ़ोतरी अपने आप आपको एक बेहतर प्रबन्धक नहीं बनाती है। वह केवल आपको एक अच्छा प्रबन्धक बनने—या न बनने—के अधिक अवसर देती है। उद्देश्य यह नहीं है कि आप शीघ्रता से बढ़ें। उद्देश्य यह है कि बढ़ते हुए भी अपना आधार न खोएं। जो कुछ बढ़ा है उसका प्रबन्ध करें, परन्तु उसके प्रति अधिक चिन्तित न हों। जब जीवन अधिक व्यस्त हो जाए और निर्णयों का भार बढ़ जाए, तब भी परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी बने रहें। बढ़ोतरी का अच्छा प्रबन्धन सुखियाँ नहीं बनाता। परन्तु वह उससे कहीं अधिक मूल्यवान बात उत्पन्न करता है। वह स्वतंत्रता उत्पन्न करता है। बिना भय के देने की स्वतंत्रता। बिना हिचकिचाहट के सेवा करने की स्वतंत्रता। जब परिस्थितियाँ बदल जाएँ, तब भी परमेश्वर पर भरोसा रखने की स्वतंत्रता। यही एक प्रबन्धक का व्यावहारिक कार्य है। और जितनी देर तक कटनी का समय बना रहता है, उसका महत्व उतना ही बढ़ता चला जाता है।

5

वह सम्पत्ति जो संसार के समाप्त होने के बाद भी बनी रहती है

अनन्तकाल के लिए निवेश

लोग धन की चर्चा ऐसे करते हैं मानो वह स्थायी हो, मानो वह हमेशा बना रहेगा, मानो जब वह पर्याप्त मात्रा में एकत्र हो जाए तो अंततः आप निश्चित होकर उसी पर भरोसा कर सकें। परन्तु पवित्रशास्त्र बार-बार इस धारणा को रोकता है। क्रोध के साथ नहीं, परन्तु सच्चाई के साथ। इस संसार में सब कुछ नष्ट होने वाला है। कीड़ा और जंग नाश कर देते हैं। व्यवस्थाएँ बदल जाती हैं। मुद्राओं का मूल्य बदलता रहता है। खाते बढ़ते और घटते रहते हैं। यहाँ तक कि जो बातें आज स्थिर दिखाई देती हैं, वे भी सदा वैसी नहीं रहेंगी। बाइबल हमसे यह दिखावा करने के लिए नहीं कहती कि ऐसा नहीं है। वह हमसे यह निर्णय करने के लिए कहती है कि वास्तव में हम किसमें निवेश कर रहे हैं।

अनन्तकाल इस संसार से भाग निकलने का मार्ग नहीं है। यह वह दृष्टिकोण है जिसके द्वारा पवित्रशास्त्र इस संसार के विषय में सत्य प्रकट करता है। जब हम ऐसी बातों में निवेश करते हैं जो संसार से भी अधिक स्थायी हैं, तब हम यह स्वीकार करते हैं कि सच्ची सुरक्षा केवल भौतिक वस्तुओं से परे ही मिलती है। दृष्टिकोण में यही परिवर्तन अनन्तकाल के दृष्टिकोण से निवेश करने का मूल है। यह हमारे ध्यान को बदल देता है कि हम अपने प्रत्येक रुपये को किस दृष्टि से देखते हैं। यह हमें हानि के भय से हटाकर प्रबन्धन के द्वारा मिलने वाली आर्थिक स्वतंत्रता के आनन्द की ओर ले जाता है। अस्थायी बातों को पकड़कर रखने के स्थान पर, हम आर्थिक अनिश्चितता के बीच भी शान्ति पाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि भविष्य किसके हाथ में है।

जब हम धन के विषय में बाइबल आधारित सिद्धान्तों को प्राथमिकता देते हैं, तब हम बाजार की बदलती हुई परिस्थितियों पर भरोसा करना छोड़ देते हैं और कहीं अधिक दृढ़ आधार पर भरोसा करना आरम्भ करते हैं। जो कहीं अधिक दृढ़ है। अन्ततः बात यह है कि आप अपनी सेवानिवृत्ति के लिए बचाई गई धनराशि और अपने प्रतिदिन की आवश्यकताओं—दोनों को परमेश्वर के भरोसे पर सौंप दें और इस सत्य में विश्राम करें कि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर भी परमेश्वर ही प्रभुता करता है।

वह बटुआ जो पुराना नहीं होता

यीशु लूका 12 में एक ऐसी बात कहता है जो सुनने में असामान्य सी लगती है। वह अपने अनुयायियों से कहता है कि अपनी सम्पत्ति बेचकर कंगालों को दे दो। फिर वह इसका कारण बताता है: “और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं

होते” अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं।” यह बात बहुत से लोगों को असहज कर देती है। यह उतावली और बिना विवेक के प्रतीत होती है, मानो यीशु लोगों से कह रहा हो कि भविष्य की सारी व्यवस्था करना छोड़ दो। परन्तु यदि आप ध्यान से पढ़ें, तो वह ऐसा नहीं कह रहा है। यीशु भविष्य की व्यवस्था करने की निन्दा नहीं कर रहा है, वरन् झूठी सुरक्षा की भावना का सामना करा रहा है। समस्या सम्पत्ति का स्वामी होना नहीं है। समस्या उस संपत्ति पर भरोसा करना है। यह विश्वास करना है कि वह सम्पत्ति आपको हानि, भय और भविष्य में सुरक्षित रख सकती है। यीशु उसी पकड़ को ढीला करना चाहता है।

सम्पत्ति बेचने और दान देने की आज्ञा इस उद्देश्य से नहीं दी गई कि हर व्यक्ति अपना सारा धन समाप्त कर दे। वे ऐसे अभ्यास हैं जो प्रकट करते हैं कि आपका भरोसा वास्तव में किस पर टिका हुआ है, आपका धन वास्तव में कहाँ है। जब आप उदारता से देते हैं, विशेषकर तब जब देने में आपको कुछ मूल्य चुकाना पड़ता है, तब आपका जीवन स्वयं एक घोषणा करता है। आप अपने जीवन से यह कहते हैं, कि “मेरा भविष्य उस धन में सुरक्षित नहीं है जिसका मैं स्वामी हूँ।” यही वह बटुआ है जो पुराना नहीं होता है। यह कोई ऐसा खाता नहीं है जिसका आप लेखा-जोखा रख सकें, वरन् यह जीवन जीने का एक दृष्टिकोण है, खुले हाथ, ढीली पकड़, और उस वस्तु को भी छोड़ देने की तत्परता जिसे आप अपने पास रख सकते हैं। इसलिए नहीं कि आपने अपने पूरे जीवन की योजना बना ली है, परन्तु इसलिए कि परमेश्वर आपकी सुधि रखता है। अपने राज्य को आपको देना उसके लिए प्रसन्नता की बात है।

इसका अर्थ यह नहीं कि आप अपने परिवार को अनदेखा करें। पवित्रशास्त्र कभी भी गैर-उत्तरदायी व्यवहार की प्रशंसा नहीं करता है। अपने परिवार का भरण-पोषण करना विश्वासयोग्यता का एक हिस्सा है। परन्तु यीशु प्राथमिकता के क्रम के विषय में स्पष्ट है। भरण-पोषण करना और अपनी सुरक्षा के लिए सब कुछ संचित करते रहना एक ही बात नहीं है। आप बुद्धिमानी से बिना अपने चारों ओर सुरक्षा का किला खड़ा किए हुए अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकते हैं। जो बटुआ पुराना नहीं होता, वह हर बार और अधिक भरता जाता है अर्थात् तब जब आप संचय करने के स्थान पर उदारता करने का चुनाव करते हैं। हर बार जब आप भय को बढ़ावा देने के स्थान पर किसी वास्तविक आवश्यकता को पूरा करते हैं। हर बार जब आप ऐसा व्यवहार करते हैं मानो अब भी परमेश्वर ही आपको संभाले हुए है।

विश्वासयोग्यता का प्रतिफल

संसार सफलता को परिणामों से मापता है: जैसे बड़े आंकड़े, अधिक तेज वृद्धि, सार्वजनिक पहचान। पवित्रशास्त्र इसे भिन्न प्रकार से मापता है। “धन्य हे, अच्छे और विश्वासयोग्य दास।” यही वह प्रतिफल है जिसकी ओर पवित्रशास्त्र बार-बार संकेत करता है। लोगों की प्रशंसा नहीं। दूसरों से तुलना नहीं। वरन् उस स्वामी की स्वीकृति, जिसने सबसे पहले ये संसाधन आपको सौंपे थे। विश्वासयोग्यता सफलता की अपेक्षा अधिक शान्त होती है। यह हमेशा आंकड़ों या समाचारों की सुर्खियों में नहीं दिखाई देती है। कभी-कभी यह एक ही दिशा में लम्बे समय तक स्थिर आज्ञाकारिता के रूप में दिखाई देती है। कभी-कभी यह तब संयम रखने के रूप में दिखाई देती है, जब आप और अधिक बल लगा सकते थे। कभी-कभी यह ऐसे देने के रूप में दिखाई देती है, जिस पर किसी का ध्यान नहीं जाता है।

यीशु के दृष्टान्त में उस दास की प्रशंसा उसकी बुद्धिमानी के कारण नहीं की गई थी। परन्तु उसकी प्रशंसा इसलिए की गई कि वह विश्वासयोग्य था। उसने जो उसे सौंपा था, उसी से उसने वही किया जिसकी उससे उम्मीद की गई थी। इससे निवेश पर

बुद्धिमानी से निवेश करना

प्रतिफल के विषय में आपकी सोच बदल जाती है। सच्चा प्रतिफल केवल यह नहीं है कि इस जीवन में आपको क्या वापस मिलता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपका जीवन परमेश्वर के उद्देश्यों के अनुसार है या नहीं। आपके निर्णय भय के स्थान पर विश्वास को प्रकट करते थे या नहीं। आपने जो कुछ पाया था, उसका प्रबन्धन विश्वासयोग्यता के साथ किया या नहीं। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने बुद्धिमानी से निर्णय लिए, निरन्तर उन्नति की, और उदारता से जीवन बिताया, फिर भी वे संसार के मापदण्डों के अनुसार कभी प्रभावशाली नहीं माने गए। और मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जो कुछ समय के लिए बहुत सफल दिखाई दिए, परन्तु उसी सफलता के बोझ के तले चुपचाप टूट गए। इनमें से केवल एक जीवन का अन्त शान्ति के साथ होता है। विश्वासयोग्यता का प्रतिफल हमेशा अभी नहीं दिखाई देता है। इसके लिए जिस अनुशासन की आवश्यकता होती है, वह थोड़े समय के लिए कष्टकारी हो सकता है। यही तो विश्वासयोग्यता का एक भाग है। आप निरन्तर आगे बढ़ते रहते हैं, बिना इस आवश्यकता के कि हर समय आपकी पुष्टि की जाए। आप भरोसा रखते हैं कि परमेश्वर उसे भी देखता है जिसे दूसरे नहीं देखते हैं। और एक दिन ऐसा आएगा जब आपको किसी बात का कारण नहीं बताना पड़ेगा। आपको अपने निर्णयों का स्पष्टीकरण नहीं देना पड़ेगा। स्वामी जान लेगा। और आप धार्मिकता का वह फल पाएँगे जो शान्ति से भरा हुआ होगा।

आर्थिक शान्ति: अपने भरण-पोषणकर्ता के रूप में परमेश्वर में विश्राम पाना

अधिकांश आर्थिक चिन्ता धन के कारण नहीं होती। वह आपकी पहचान से जुड़ी हुई होती है। लोग इसलिए चिन्ता करते हैं क्योंकि उन्हें यह नहीं पता होता है कि उन संख्याओं के बिना उनकी पहचान क्या है। अर्थात् उस अतिरिक्त सुरक्षित धनराशि के बिना। उस नियंत्रण के भाव के बिना। जब आर्थिक स्थिति डगमगाती हुई लगती है, तो वह केवल सुख-सुविधा के लिए ही खतरा नहीं बनती, वह आपकी अपनी पहचान की समझ को भी चुनौती देती है। पब्लिशर्स बार-बार हमें एक भिन्न केन्द्र की ओर लौटाता है। आपकी पहचान आपके धन से नहीं है। आपकी पहचान उससे नहीं है जो आपने इकट्ठा किया है। आपकी पहचान उससे भी नहीं है जिसे आप अपने लिए सुरक्षित रख सकते हैं। आप एक सन्तान हैं। अर्थात् परमेश्वर की सन्तान हैं। लेपालक होना सब कुछ बदल देता है। परमेश्वर का आत्मा हमें पुकारने देता है, “हे अब्बा!” बच्चे यह दिखावा नहीं करते कि कोई खतरा नहीं है। परन्तु वे भरण-पोषण का पूरा भार भी अपने ऊपर नहीं उठाते हैं। वह पिता का कार्य है।

प्रबन्ध करने वाले परमेश्वर में विश्राम करने का अर्थ यह नहीं कि आप भुगतानों या अपने उत्तरदायित्वों की अनदेखी करें। इसका अर्थ यह है कि आप उन्हें अपनी पहचान न बनने दें। साथ ही इसका अर्थ यह भी है कि आप अपना काम सच्चाई से करें और फिर रात को सो जाएँ, क्योंकि आप विश्वास करते हैं कि जब आप काम नहीं कर रहे होते, तब परमेश्वर काम कर रहा होता है। “एक मसीही होकर मैं धन की चिन्ता करना कैसे छोड़ूँ?” यह प्रश्न प्रायः पूछा जाता है। इसका उत्तर प्रायः कोई उपाय या सूत्र नहीं होता। यह उस आधार के बदलने की बात है जिस पर आप खड़े हैं। जब आपकी पहचान स्थिर हो जाती है, तब चिन्ता कम होने लगती है। जब आप जानते हैं कि आप किसके हैं, तब धन अपनी कुछ शक्ति खो देता है। उसका महत्व बना रहता है। परन्तु अब वह न सबसे पहले बोलता है, न सबसे ऊँची आवाज में बोलता है। मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिनके साधन कम थे, फिर भी वे शान्ति से जीते थे क्योंकि उनका भरोसा परमेश्वर पर था। और मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है जिनके पास बहुतायत थी, फिर भी वे निरन्तर चिन्ता में रहते थे क्योंकि वे मानते थे कि सब कुछ उन्हीं पर निर्भर है। अन्तर उनकी बुद्धि में नहीं था। अन्तर इस बात में था कि वे अपनी सुरक्षा किसमें देखते थे। विश्राम ऐसी बात नहीं

है जिसे आप एक बार प्राप्त कर लें। यह ऐसी बात है जिसकी ओर आपको बार-बार लौटना पड़ता है। विशेषकर तब जब बाजार बदलता है। विशेषकर तब जब योजनाएँ बदल जाती हैं। विशेषकर तब जब भविष्य अनिश्चित लगता है। प्रबन्ध करने वाले परमेश्वर में विश्राम करने का अर्थ है कि बार-बार यह विश्वास करना कि परमेश्वर जानता है कि आपको क्या चाहिए और वह कभी देर नहीं करता है।

अन्त में प्रश्न सरल है। जब सब कुछ मिट जाएगा, तब क्या बना रहेगा? लेखा-जोखा बन्द हो जाएगा। पदवी भुला दी जाएगी। सम्पत्ति किसी और के पास चली जाएगी। पवित्रशास्त्र इसे दुखद बात नहीं मानता। वह इसे जीवन का सामान्य भाग मानता है। जो बना रहता है, वह विश्वासयोग्यता है। उदारता है। भरोसा है। वह शान्त आज्ञाकारिता जिसे किसी ने नहीं देखा। खुले हाथों से किए गए वे चुनाव जो मानवीय दृष्टि से समझदारी के नहीं लगते थे। यह अटल विश्वास कि परमेश्वर पर्याप्त है। यही वह धन है जो संसार से भी अधिक समय तक बना रहता है। उसमें न वृद्धि का घमण्ड होता है। न उसका मूल्य गिरता है। न वह पुराना होता है। और जो कोई उसमें निवेश करना चाहे, उसके लिए वह उपलब्ध है।



निष्कर्षः खुले हाथ

मैं एक बार ऐसे व्यक्ति के साथ बैठा था जिसने लगभग सब कुछ खो दिया था। यह सब एक ही रात में नहीं हुआ, परन्तु इतनी जल्दी हुआ कि उसे लगा मानो उसके पैरों तले की भूमि खिसक गई हो। जिस व्यवसाय को खड़ा करने में उसे दशकों लगे थे, वह कुछ कठिन महीनों में ही बिखर गया। जो निर्णय पहले सही दिखाई देते थे, वे अब काम नहीं कर रहे थे। बाजार बदल गया। ऋण का बोझ बढ़ गया। और वे आँकड़े जिनसे उसे हमेशा स्थिरता का अनुभव होता था, अचानक निरर्थक हो गए। वह किसी योजना पर बात करने नहीं आया था। वह इसलिए आया था क्योंकि उसे अब यह भी समझ नहीं आ रहा था कि वह कौन है। वर्षों तक उसकी पहचान उसकी योग्यता से जुड़ी हुई थी। अर्थात् दूसरों की आवश्यकताएँ पूरी करने से। वह ऐसा व्यक्ति था जिसके पास हर बात का उत्तर होता था। जब यह सब कुछ ढह गया, तो उसे लगा कि उसके भीतर भी कुछ बड़ा ढह गया है। उसने शान्त स्वर में मुझसे कहा कि धन खोने का दुःख उतना नहीं है, जितना यह एहसास खोने का है कि उसका भी महत्व था।

हमने बहुत देर तक बात की। भय के विषय में। लज्जा के विषय में। उस विचित्र मौन के विषय में जो तब छा जाता है जब जिन बातों पर आपने भरोसा रखा था, और वे आपको कोई उत्तर नहीं देती। और उसी बातचीत के बीच उसने एक ऐसी बात कही जिसे मैं कभी नहीं भूला। उसने कहा, “मुझे लगता है कि शायद पहली बार मेरे हाथ सचमुच खुले हैं।” उसका अर्थ उदार होने से नहीं था। उसका अर्थ खाली होने से था। और वर्षों बाद पहली बार वह परमेश्वर के सामने सच्चे मन से आया। न प्रभावशाली बनने का प्रयास। न आत्मविश्वास का प्रदर्शन। वह जैसा था, वैसा ही परमेश्वर के सामने उपस्थित था। उसने दिखावा किए बिना प्रार्थना की। उसने किसी भी प्रकार की सफाई दिए बिना सहायता माँगी। उसने परमेश्वर पर इसलिए भरोसा नहीं किया कि सब कुछ ठीक चल रहा था, वरन् इसलिए कि अब उसके पास सहारा लेने के लिए और कुछ नहीं बचा था। उस हानि ने उसे नहीं बचाया। परमेश्वर ने उसे बचाया। परन्तु उस हानि ने वह सब मिटा दिया जो उसे बचाने का दिखावा कर रहा था। यही खुला हाथ है।

विश्वासयोग्यता के परिणाम

पवित्रशास्त्र हमें कभी भी धन से घृणा करना नहीं सिखाता है। वह हमें उससे चिपके रहने के विरुद्ध चेतावनी देता है। वह बार-बार स्मरण कराता है कि हमारे हाथों में जो कुछ है, वह सब अस्थायी है। धन और निर्धनता दोनों मिट जाएंगे। आप अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकते। न धन। न पद। न वह सुरक्षा जिसे बनाने के लिए आपने बहुत परिश्रम किया है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि कुछ भी आगे नहीं जाता। आप धन अपने साथ नहीं ले जा सकते। परन्तु आप विश्वासयोग्यता के परिणाम आगे भेज सकते हैं। आप उदारता आगे भेज सकते हैं। आप आज्ञाकारिता आगे भेज सकते हैं। आप भरोसा आगे भेज सकते हैं। आप वे शान्त निर्णय आगे भेज सकते हैं जिनकी किसी ने सराहना नहीं की, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें देखा है। ये बातें समाप्त नहीं होतीं। जीवन समाप्त होने पर भी वे नहीं मिटती हैं। वे एकल की जाती हैं। उनको स्मरण किया जाता है। उन्हें भिन्न रीति से गिना जाता है। ये बातें आपको नहीं बचाती हैं, परन्तु वे पिता के साथ आपके सम्बन्ध का फल हैं।

खुले हाथ का अर्थ लापरवाही से जीवन जीना नहीं है। इसका अर्थ सच्चाई से जीवन जीना है। इसका अर्थ कठिन परिश्रम करना तो है, परन्तु अपने काम की पूजा न करना है। सावधानी से योजना बनाना, परन्तु यह न मानना कि परिणाम आपके नियन्त्रण में हैं। विश्वासयोग्यता से प्रबन्ध करना, परन्तु यह न मानना कि सब कुछ आप पर ही निर्भर है। इसका अर्थ यह जानना है कि कब देना है। कब प्रतीक्षा करनी है। और कब छोड़ देना है। प्रबन्ध करने का उद्देश्य कभी स्वयं को सिद्ध करना नहीं था। उसका उद्देश्य यह था कि जो कुछ थोड़े समय के लिए आपके हाथों से होकर गुजरा है, उसे परमेश्वर को सौंपकर उस पर भरोसा रखें। और एक दिन यह सब चला जाएगा। यह कोई धमकी नहीं है। यह राहत की बात है। आपको इसे सदा नहीं उठाए रखना है।

स्वतन्त्रता की बुलाहट

आप इस समय जहाँ कहीं भी हैं, एक क्षण के लिए रुकिए। अपने हाथों की ओर देखिए। आप किस बात को बहुत कसकर पकड़े हुए हैं? किस बात को छोड़ने से आप डरते हैं? आप धन से ऐसी कौन-सी बात की अपेक्षा कर रहे हैं, जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है? यह मार्गदर्शिका आपको हानि से डरने के लिए नहीं कहती है। यह आपको स्वतन्त्रता की ओर ले जाने के लिए कहती है। ऐसी स्वतन्त्रता, तब मिलती है जब आप अस्थायी बातों से अनन्त सुरक्षा पाने की आशा करना छोड़ देते हैं।

समापन प्रार्थना

हे परमेश्वर, तू हमारे हाथों के काम को देखता है। तू जानता है कि हम क्या बना रहे हैं और क्या खोने से डरते हैं। हमें सिखा कि जो कुछ तू देता है, उसे हम नम्रता और साहस के साथ थामे रहें। हमारी सहायता कर कि हम विश्वासयोग्यता से परिश्रम करें, परन्तु अपने परिश्रम पर भरोसा न रखें। हमारी सहायता कर कि हम घबराहट के बिना प्रबन्धन करें। हमारी सहायता कर कि हम बिना भय के दें। हमारे परिश्रम को आशीष दे। हमारे परिवारों की रक्षा कर। हमारे निर्णयों में हमें बुद्धि दे और अनिश्चितता के समय हमें शान्ति दे। हमारे हाथ खुले और हमारे मन स्थिर बनाए रख। और जब सब लेखे-जोखे पूरे हो जाएँ और सारा काम समाप्त हो जाए, तब हम आनन्द के साथ तेरे सामने खड़े हों, यह जानते हुए कि हमने उन वस्तुओं से अधिक तुझ पर भरोसा रखा, वे वस्तुएँ जो कुछ समय के लिए हमारे हाथों से होकर गुजरी थीं। आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्टिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodore of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

